एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 02, अंक: 04 (जुलाई-अगस्त, 2022)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

थनैला रोग

(*अमित कुमार[1], नवीन कुमार[1] एवं आकाश[2])
[1]लाला लाजपत राय पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविध्यालय, हिसार, हरियाणा
[2]चौधरी चरण सिंह कृषि विश्वविधालय, हिसार, हरियाणा
संवादी लेखक का ईमेल पता: amitdhartterwal@gmail.com

थनैला रोग में थनों की कोशिका सूज जाती हैं जिसके कारण दूध का उत्पादन कम हो जाता है और दूध अस्वच्छ हो जाता है। यह एक पशुओं को प्रभावित करने वाली सबसे बड़ी समस्याओं में से एक है।

1. थनैला रोग की वजह से काफी ज्यादा आर्थिक नुकसान होता है।
2. अधिकतर यह रोग पशुओं में जीवाणु संक्रमण की वजह से होता है पर कुकुरमुत्ता, खमीर इत्यादि से भी होता है।
3. पशुशाला के बाड़े में अस्वच्छता और गंदगी, थनों की चोट, खनिज और विटामिनों की कमी तथा अपूर्ण दूध निकालना पशु को रोग के लिए संवेदनशील बनाते हैं।
4. थनैला से प्रभावित हिस्सों से उत्पादित होने वाले दूध में भौतिक तथा रासायनिक परिवर्तन हो जाते हैं।
5. अधिकांश रूप से *E.coli* (ईकोलाई), *Staphylococcus aureus* (स्टेफायलोकॉकस ऑरियस), *Staphylococcus species* (स्टेफायलोकॉकस स्पेसीज) इत्यादि थनैला का कारण होते हैं।

थनैला के लक्षण

1. यह रोग तीव्र दीर्घकालिक या लक्षणहीन अवस्था में हो सकता है।
2. प्रभावित पशु चारा और पानी कम ग्रहण करते हैं।
3. पशु का शारीरिक तापमान बढ़ सकता है।
4. प्रभावित थन के हिस्से तथा थनों में सूजन, लाली तथा दर्द महसूस होता है।
5. पशु के दूध में थक्के, खून, मवाद तथा अत्यधिक पानी पाया जा सकता है।
6. दूध का उत्पादन तथा आना कम या बंद हो सकता है।
7. समुचित चिकित्सा न मिलने से प्रभावित थन कड़ा और पत्थर के जैसा होकर खराब हो जाता है।
8. गैंग्रीनस मैस्टाइटिस में थन टूट कर गिर जाता है तथा घाव हो जाता है।

थनैला रोग का इलाज

1. रोगी पशु को तत्काल अन्य सभी पशुओं से अलग आइसोलेशन कक्ष में रखें।
2. रोग की संभावना होते ही पशु चिकित्सक से संपर्क करके दूध जांच केंद्र से दूध का कल्चर सेंसटिविटी टेस्ट करवाकर ही एंटीबायोटिक का प्रयोग करें।
3. पशु चिकित्सक से रोग की समुचित चिकित्सा करवाएं।

थनैला रोग की रोकथाम

1. पशु शाला के पशु बाड़े में समय-समय पर स्वच्छता तथा कीटाणुशोधन करना चाहिए।
2. वयस्क एवं अधिक दूध देने वाले पशुओं में पोषण का विशेष ध्यान दे।
3. थनों में चोट का तुरंत इलाज करवाना चाहिए।
4. समय-समय पर दूध की जांच करवाने के लिए कल्चर सेंसटिविटी टेस्ट, कैलिफोर्निया मैस्टाइटिस टेस्ट, सोमेटिक सेल काउंट टेस्ट, स्ट्रिप कप टेस्ट इत्यादि प्रयोग किए जा सकते हैं।
5. फुल हैंड टेक्निक से दूध निकाले तथा संपूर्ण दूध निकाले।
6. दूध से पहले तथा बाद में थनों की धुलाई गुनगुने पानी तथा लाल दवाई के घोल से करें।
7. दूध की पहली तीन चार धार जांच के सैंपल में ना लें।
8. पशु रोगी से प्राप्त दूध बा ड़े से दूर किसी गड्ढे में निस्तारण करें।
9. दुहारे के हाथों की हाथों को जरूर धोएं तथा बाल्टी में बाल, मिट्टी, गोबर ना आने दे।
10. दूध दोहने के बाद 30 मिनट तक थनों की नली खुली रहती है इसलिए थनों को एंटीसेप्टिक घोल में डिप करें, पशु का बिछावन साफ रखें तथा हरा चारा, खल-बिनोले एवं आटा डाले ताकि पशु चरता रहे और ना बैठे।